5

दाऊद का पुत्र/परमेश्वर का पुत्र

(2 शमूएल 7:1-17)

हर नगर चाहे वह कितना भी बड़ा हो या छोटा, उसमें मरकुस 10:46-52 में यीशु से मिले भिखारी अन्धे बरतिमाई जैसा कोई न कोई व्यक्ति अवश्य होता है। ये वे लोग हैं जो वहां मिल ही जाते हैं। तौ भी जो लोग वहां नहीं होते वे इसलिए दुखी हैं क्योंकि कोई उनकी ओर इतना ध्यान नहीं देता।

हम नहीं जानते कि बरतिमाई कितनी देर से अन्धा था या वह सड़क के किनारे कब तक बैठता था, पर वह सही समय पर सही स्थान पर था क्योंकि एक दिन यीशु नासरी उधर से गुज़रा। स्पष्टतया यीशु और अंधों को आंखें देने की उसकी योग्यता के बारे में सुनने के कारण बरतिमाई ने इस अवसर को हाथ से न जाने देने की ठान ली थी। वह ''पुकारने लगा'' मरकुस 10:47 संकेत देता है कि वह केवल एक ही बार नहीं चिल्लाया परन्तु कहता रहा हे दाऊद के सन्तान यीशु ''मुझ पर दया कर।'' इस अनजान व्यक्ति द्वारा शोर मचाने के कारण परेशान हुए पास खड़े कुछ लोगों ने उसे डांटा और उसे खामोश रहने के लिए कहा। मरकुस का विवरण कहता है कि ''हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर'' (आयत 48)। उसकी ज़िद से लाभ हुआ। यीशु ने रुककर वहां खड़े लोगों को उसे ''बुलाने'' को कहा। फिर दर्शकों ने बरतिमाई से कहा, ''ढांढस बांध! उठ! वह तुझे बुलाता है।'' बरतिमाई ने बात मान ली और यीशु ने उसे चंगा कर दिया।

बरतिमाई का विवरण अपने आप में एक अद्‌भुत कहानी है बल्कि यह दिलचस्प सवाल भी खड़ा करता है कि बरतिमाई ने यीशु को ''दाऊद की सन्तान'' क्यों कहा? उसने ''परमेश्वर का पुत्र,'' ''प्रभु,'' ''स्वामी'' या जो यीशु आम तौर पर अपने आपको कहता था, ''मनुष्य का पुत्र'' जैसे अधिक प्रचलित शीर्षकों में से किसी का इस्तेमाल क्यों नहीं किया? इस अन्धे आदमी की चंगाई में दाऊद की वंशावली की किसी भूमिका के रूप में यीशु की विरासत क्यों थी?

प्रतिज्ञा

दाऊद के लिए ''घर'' बनाना!

कहानी 2 शमूएल 7:1-17 में लिखित राजा दाऊद के साथ एक हज़ार साल पहले की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा तक ले जाती है। इस्राएल के राजा के रूप में अपने शासन में दाऊद शान्त मुकाम पर पहुंचा था। उसके पास एक पक्का निवास स्थान (सैनिक अभियानों के समय तम्बू में रहने को छोड़) था, ''और यहोवा ने उसको उसके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया था'' (आयत 1ख)। अपनी स्थिति पर दाऊद को कुछ लगा कि सही नहीं है और उसने नातान भविष्यवक्ता से अपने मन की बात कही: ''देख, मैं तो देवदारू के बने हुए घर में रहता हूं, परन्तु

परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में रहता है'' (आयत 2)। दाऊद को यह उचित नहीं लगा कि वह तो बढ़िया घर में रहे पर पवित्र सन्दूक जिसे इस्राएलियों ने मिस्र से छूटने के बाद बनाया और तम्बू के अन्दर रखा था अभी भी तम्बू में ही था। वचन से संकेत मिलता है पर स्पष्ट नहीं कहा गया कि सन्दूक के लिए उपयुक्त भवन बनाकर ''परमेश्वर के लिए घर'' या अन्य शब्दों में ''मन्दिर'' की बात दाऊद के मन में क्यों आई। वह परमेश्वर को आदर देना चाहता था और यह सम्मान देने का उचित समय लग रहा था। उसकी योजनाओं के सम्बन्ध में नातान ने उसे आश्वस्त किया, ''यहोवा तेरे साथ है।'' परन्तु उसी रात उसको एक दर्शन मिला जिसमें परमेश्वर ने उसे दाऊद के लिए संदेश दिया:

> यहोवा यों कहता है, कि क्या तू मेरे निवास के लिये घर बनवाएगा? जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा, तम्बू के निवास में आया जाया करता हूं। जहां-जहां मैं समस्त इस्राएलियों के बीच फिरता रहा, क्या मैंने कहीं इस्राएल के किसी गोत्र से, जिसे मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल की चरवाही करने को ठहराया हो, ऐसी बात कभी कही, कि तुम ने मेरे लिऐ देवदारू का घर क्यों नहीं बनवाया? (2 शमूएल 7:5-7)।

संदेश स्पष्ट था कि परमेश्वर को उसकी आवश्यकता नहीं थी और न ही उसने मांगा था। इसके अलावा यदि उसे आवश्यकता होती तो उसे दाऊद को यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि वह उसके घर में है। यह स्पष्ट लगा कि दाऊद की मंशा अच्छी है पर साथ ही यह उसकी अपनी परिकल्पना थी। दाऊद एक महान राजा था पर परमेश्वर तो अभी भी परमेश्वर था; उसे अपने लिए दाऊद का ''समर्थन'' नहीं चाहिए था।

8 से 11क आयतों में परमेश्वर ने दाऊद को याद दिलाया कि वही है जो आशिषें देता है। वही था जिसने दाऊद को चरवाहे के दीन काम से इस्राएल की गद्दी पर बिठाया था। यह वही था जिसने दाऊद के सब शत्रुओं को पराजित किया था और उसी ने यह सुनिश्चित करना था कि उसके लोगों को विश्राम और सुरक्षा का स्थान मिले ताकि उनके शत्रु उन्हें और न सता सकें।

फिर आयत 11ख में हम सचमुच में अनोखी बात देखते हैं: *''और यहोवा तुझे यह भी बताता है कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा।''* अपने लिए दाऊद को एक घर बनाने की अनुमति देने के बजाय परमेश्वर ने दाऊद के लिए ही प्रतिज्ञा की। जैसा कि इस आयत से स्पष्ट होता है, परमेश्वर भौतिक निवास स्थान की बात नहीं कर रहा था। वह दाऊद के लिए एक शाही वंशावली अर्थात दाऊद की मृत्यु के पश्चात्त शासन करने के लिए सन्तान देने की बात कर रहा था। ''घर'' शब्द यहां राजवंश के लिए, जैसा बर्तानवी लोग ''द हाउस ऑफ़ विंडसर'' कहते हुए करते हैं। परमेश्वर ''दाऊद का घराना'' बनाने के लिए प्रतिज्ञा कर रहा था।

दाऊद की गद्दी को सदा के लिए स्थापित करना!

असल में 2 शमूएल 7:12-16 में तीन प्रतिज्ञाएं की गई हैं (1) एक पुत्र ने दाऊद के सिंहासन पर राज्य करना था; (2) इस पुत्र में जो दाऊद नहीं था, परमेश्वर को आदर देने के लिए (मन्दिर) बनाना था और सबसे महत्वपूर्ण (3) परमेश्वर ने ''उसके राज्य को सदा के

लिए स्थापित करना'' था। इन वचनबद्धताओं के साथ परमेश्वर ने दाऊद के पुत्र का पिता होने की प्रतिज्ञा की। उसने उसे उसके पापों के लिए ताड़ना तो दी थी पर उससे अपने निरन्तर प्रेम को नहीं हटाना था। जैसा उसने दाऊद के पूर्वाधिकारी शाऊल से ले लिया था (1 शमूएल 15)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, ''तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी'' (2 शमूएल 7:16)। दाऊद की स्थिति में किसी से इतनी सन्तुष्टिजनक प्रतिज्ञा नहीं हो सकी थी। परमेश्वर ने उसे आश्वस्त किया कि अन्त में इस्राएल को विश्राम मिलेगा और उसका राजवंश सदा तक बना रहेगा। 2 शमूएल 7:18-29 लिखता है कि दाऊद ने बहुत दीन होकर धन्यवाद के गहरे बोध के साथ यहोवा के इनकार और उसकी आशीष दोनों को स्वीकार कर लिया।

परमेश्वर की दाऊद के साथ प्रतिज्ञाओं को नज़दीकी से जांचा जा सकता है। पुराने नियम की अन्य कई भविष्यवाणियों की तरह इस वचन का पूरा होना भी दोहरा है, एक तो बताए गए समय के निकट और दूसरा काफी देर बाद। निकट पूरा होना दाऊद के पुत्र सुलेमान में था जिसे मन्दिर बनाने की अनुमति दी गई थी (1 राजाओं 5-8)। परमेश्वर ने सुलैमान के शासन की महानता को बनाया। इसी कारण आयत 14 कहती है कि सुलैमान के अपनी बहुत सी विदेशी पत्नियों के प्रभाव के कारण मूर्तिपूजा में गिर जाने पर परमेश्वर ने उसे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार दण्ड दिया (1 राजाओं 11)। यह देखना कठिन नहीं है कि सुलैमान के शासन के द्वारा और उसके साथ परमेश्वर के व्यवहारों के द्वारा ये प्रतिज्ञाएं कैसे पूरी हुईं।

परन्तु यह कहना कठिन होगा कि दाऊद की गद्दी के सदा तक स्थिर होने की प्रतिज्ञा सुलैमान के द्वारा पूरी हुई। वास्तव में पुराना नियम स्पष्टता से दिखाता है कि ऐसा नहीं हुआ। सुलैमान के बाद राज्य दो भागों में बंट गया जिसमें दाऊद के कुल के राजाओं को केवल दक्षिणी राज्य (यहूदा) ने बनाए रखा। यह राज्य भी अन्त में परमेश्वर के विरुद्ध लोगों के विद्रोह और बाबुल के साम्राज्य द्वारा उन पर जय पाने के कारण बाद में नष्ट हो गया। दाऊद से चलने वाला राजाओं का वंश अस्थाई रूप में बना था। इसलिए 2 शमूएल 7:13, 16 में ''सदैव'' शब्द सुलैमान से आगे किसी और के लिए था।

प्रतिज्ञा में मसीहा की आशा

मसीहा की आशा

2 शमूएल 7 में दाऊद के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा ने इस्राएलियों के लिए आने वाले राजा अर्थात मसीहा (मूलतया ''अभिषिक्त'') की उम्मीद का आधार बनाया जिसने अपने लोगों को छुड़ाना था। इस्राएल के एक के बाद एक शत्रुओं द्वारा पराजित होने से छुड़ाने वाले की यह आशा और बढ़ गई। बाबुल के चढ़ाई करने और राजत्व के विघटन के बाद विशेषकर, ''इस्राएल के बन्दियों को लौटा'' लाने वाले की तड़प (यिर्मयाह 33:7) यहूदी राजनैतिक और धार्मिक आशा का भाग बन गई।

इस प्रतिज्ञा के आधार पर यहूदी लोग अपने आने वाले मसीहा को ''नया दाऊद'' यानी एक और योद्धा/राजा के रूप में देखते थे। जिसने दाऊद की तरह ही इस्राएल को उसके शत्रुओं

से चैन दिलाना था। इस मसीहा ने ''दाऊद की सन्तान'' होना था जिसका राज्य कभी खत्म नहीं होना था। यह आशा पुराने नियम के कई वचनों में स्पष्ट की गई जैसा कि नीचे दिए गए वचनों से पता चलता है:

यहोवा की यह वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं
जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा,
और वह राजा बनकर बुद्धि से राज करेगा,
और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा।
उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे,
और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे
और यहोवा उसका नाम ''यहोवा हमारी धार्मिकता रखेगा'' (यिर्मयाह 23:5, 6)।

और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूंगा, और तुम्हारे बन्धनों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा; और परदेशी फिर उन से अपनी सेवा न कराने पाएंगे। परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसको मैं उन पर राज्य करने के लिये ठहराऊंगा (यिर्मयाह 30:8, 9)।

क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है;
और प्रभुता उसके कांधे पर होगी,
और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करने वाला
पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा,
इसलिये कि वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए
न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा।
सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा (यशायाह 9:6, 7)।

मेरा दास दाऊद उनका राजा होगा; सो उन सभों का एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मानकर उनके अनुसार चलेंगे। वे उस देश में रहेंगे जिसे मैं ने अपने दास याकूब को दिया था; और जिस में तुम्हारे पुरखा रहते थे, उसी में वे और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान रहेगा (यहेजकेल 37:24, 25)।

हम चकित हो सकते हैं कि मसीहा ने ''दूसरा दाऊद'' क्यों होना था। दूसरा, ''मूसा, नया अब्राहम,'' या एक और नूह या दानिय्येल क्यों नहीं? बेशक इसका मुख्य कारण यह था कि यह प्रतिज्ञा दाऊद को दी गई थी। इसके अलावा दाऊद का जीवन उस जीवन की परछाई था जो यीशु का होना था। दाऊद चरवाहा होने के साथ-साथ राजा भी था, और नया नियम यीशु को भी अपने पीछे चलने वालों पर चरवाहा और राजा दोनों बताता है (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 2:2;

27:37; यूहन्ना 10:11-18; 1 पतरस 5:1-4; प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16)। इसके अलावा दाऊद के कष्ट यीशु के कष्टों की परछाई ही थे। इस्राएल का अकेला हाकिम बनने से पूर्व दाऊद को शाऊल राजा द्वारा सताया गया था जो उसकी सफलता से डाह करता था (देखें 1 शमूएल 18:28, 29)। कई साल बाद वह अपने ही पुत्र अबशालोम द्वारा मारा जाने वाला था, जिसने बहुत से लोगों द्वारा समर्थन प्राप्त करके अपने पिता से बगावत कर दी थी (2 शमूएल 15:10-12)। दोनों ही मामलों में दाऊद को भागकर एक भगौड़े का जीवन बिताने के लिए विवश होना पड़ा, यानी दोनों ही जगह वह खतरे में था (1 शमूएल 19:10-12; 2 शमूएल 15:14; देखें भजन संहिता 54)। दाऊद के कष्टों और हमारे प्रभु के कष्टों में समानताएं भजन संहिता 22 में जिसकी पहली आयत क्रूस पर लटकते हुए यीशु ने दोहराई थी, सबसे स्पष्ट बताई जाती है। भजन संहिता और यीशु के अनुभवों में हम कई ज़बर्दस्त समानताएं देखते हैं: परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने का बोद्ध, आस-पास के लोगों द्वारा अपमानजनक ठट्ठे, पूरी तरह से थकावट और चकनाचूर होना और यहां तक कि दूसरों से उसके कपड़ों पर पर्चियां डाली।

मसीहा से जुड़ी आशा पूरी हुई

नये नियम के लेखक यीशु को ''दाऊद की सन्तान'' के रूप में दिखाने में बहुत स्पष्ट थे। अन्धा बरतिमाई सही था! इसी लिए यीशु को बार-बार ''मसीह'' (*ख्रिस्तोस,* जो ''मसीहा'' के सम रूप है) का अर्थ है ''अभिषिक्त।''

यीशु के मसीहा होने/राजा होने के विषय से कई प्रकार से सामने लाया जाता है। उदाहरण के लिए मत्ती रचित सुसमाचार का लक्ष्य यीशु को इस्राएल के चिर प्रतीक्षित राजा के रूप में दिखाना है। इससे पता चलता है कि इस विवरण का आरम्भ क्यों हुआ, ''अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु की वंशावली।'' पहले तो यीशु का परिचय ''मसीह'' के रूप में, फिर दाऊद की ''सन्तान'' के रूप में (एक बात जो 2 शमूएल 7 और इसकी प्रतिज्ञाओं से परिचित यहूदी पाठकों को भूली नहीं थीं) हुई। फिर पुस्तक उसके दाऊद की सन्तान होने के दावे को साबित करने के लिए उसकी वंशावली देती है। लूका 2:4, 5 भी बताता है कि यीशु का जन्म अपने ग्रहनगर नासरत में नहीं बल्कि बैतलहम में हुआ था, क्योंकि यूसुफ़ ''दाऊद के घराने और परिवार से था'' और उसे जनगणना तथा कर लगाए जाने के लिए अपने पूवर्जों के नगर में नाम लिखवाना आवश्यक था। यह कोई संयोग की बात नहीं थी कि यीशु का जन्म बैतलहम में यानी ''दाऊद के नगर'' में होना था।

यूहन्ना ने इसे सुसमाचार के अपने विवरण के लक्ष्य के रूप में बताया ''कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30, 31)। जब यीशु ने अपने चेलों से पूछा, ''तुम मुझे क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?'' पतरस ने यीशु के विषय में पाए जाने वाले और विचारों के उलट कहा, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' यीशु ने यह कहते हुए कि पतरस पर यह बात स्वयं परमेश्वर ने प्रगट की है, इस अंगीकार के लिए उसकी तारीफ़ की (मत्ती 16:15-17)। नये नियम के अन्त में प्रकाशितवाक्य 19:16 यीशु को ''राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु'' होना घोषित करता है। वह अन्त में राजा ही है, न केवल इस्राएल का बल्कि सारी मनुष्य जाति का।

ठुकराई गई प्रतिज्ञाएं

यीशु को अपने समय अधिकतर यहूदियों द्वारा मसीहा के रूप में ठुकराया क्यों गया? यदि भविष्यवाणियां इतनी स्पष्ट थीं और यीशु ने उन्हें इतनी स्पष्टता से पूरा किया, तो उन्हें गलती कैसे लग गई?

इसका उत्तर यह है कि *यीशु ने सदियों से बनी मसीहा के लिए आम उम्मीदों को पूरा नहीं किया*। लोगों के मसीहा के विषय में अलग-अलग विचार थे कि वह कैसा होगा और क्या करेगा, और कोई भी जो अपेक्षित ''मसीहा की बातें'' न करे उसे मसीहा होने के लिए सम्भावित पात्र होने से हटा दिया जाना था।

पहली सदी के संसार, जिसमें यीशु था, मुख्यतया यहूदी लोग मसीहा को किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते थे, जो रोमी दमनकारियों को, जिन्होंने 63 ई.पू. से फलस्तीन को कब्जे में कर रखा था, ''इस्राएल के बन्दियों को लौटा ले आना था।'' उनका विश्वास था कि वह एक योद्धा/राजा (दाऊद की तरह) होगा और सेना खड़ी करेगा और अपने शत्रुओं से युद्ध में उनकी विजयी ढंग से अगुआई करेगा। इसके विपरीत यीशु शान्ति और शत्रुओं के लिए प्रेम का प्रचार करते हुए आया, जो ऐसी बात थी कि शायद ही किसी ने संसार के सबसे बड़े साम्राज्य के बीच पूरी तरह विरोध करने वाले अगुवे से उम्मीद की हो।

फिर यीशु के क्रूस दिए जाने की समस्या थी? यहूदी दिमाग इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता था कि मसीहा इस्राएल के शत्रुओं द्वारा मारा जाए, जो रोमी क्रूस पर अपमान जनक मृत्यु के लिए अपने आपको दे दे। बेशक यह इस बात का कारण था कि गलील की उसकी सेवकाई के आरम्भिक दिनों में लोगों की इतनी बड़ी भीड़ यीशु के पीछे चलती थी पर उसके मसीहा होने की बात क्रूस की ओर जाते देख बहुत से लोग उसे छोड़ गए, क्योंकि यह रोम पर विजय नहीं थी।

यहां तक कि यीशु के सबसे नज़दीकी लोगों को इसे मानना कठिन लगा। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, जिसने पहले यीशु की पहचान परमेश्वर की ओर से भेजे गए अभिषेक के रूप में की थी (मत्ती 3:13-15; यूहन्ना 1:19-34; 3:25-30), बाद में पूछा कि यीशु वही है या नहीं जिसकी उम्मीद की जा रही थी, या वह और उसके चेले किसी दूसरे की राह देखें (मत्ती 11:2-6)। यूहन्ना हेरोदेस की कैद में यह सुनने की प्रतीक्षा में कि मसीहा उठ खड़ा हुआ है और इस्राएल को नया बनाने लगा है, राह देख रहा था-परन्तु कोई सैन्य कार्यवाही नहीं। यीशु ने उसे ध्यान दिलाया कि नबियों द्वारा मसीहा सम्बन्धी बताई गई घटनाएं वास्तव में पूरा होने को थीं।

यीशु के अपने चेलों को उसके मसीहा होने के स्वभाव को समझने में कठिनाई आई। याकूब और यूहन्ना की अपने राज्य में आने पर उसके दाहिने और बाएं बिठाने की अनुमति की विनती के पीछे निश्चित रूप में एक शाही सैनिक हाकिम होने की उम्मीद थी (मरकुस 10:35-40; मत्ती 20:20-23)। अन्य शब्दों में वे नये प्रबन्धन में प्रमुख अगुवे बनना चाहते थे। प्रेरितों 1:6 लिखता है कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद भी उसके चेलों ने उससे पूछा, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?'' तो फिर यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि यीशु के समय के अधिकतर लोग उसके मसीहा होने के स्वभाव और उसे परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ होने को समझने और मानने में गलती कैसे कर गए। उनकी गलती यह थी कि उन्होंने जिन्होंने ध्यान दिया जो उसने दिखाए, जिन से बिना संदेह के यह पता चला कि वह ही चिर-प्रतीक्षित

था (यूहन्ना 10:22-30)।

एक दूसरा कारण कि अधिकतर लोगों ने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार क्यों नहीं किया यह था कि *वह वास्तव में* ''दाऊद की सन्तान'' होने से कहीं अधिक था। मत्ती 22:41-46 में यीशु ने फरीसियों से यह पूछते हुए कि ''मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?'' फरीसियों (अपने सबसे बड़े विरोधियों) उनके इस उत्तर पर कि ''दाऊद का,'' यीशु ने उन्हें ध्यान दिलाया कि भजन संहिता 110:1 में दाऊद ने मसीहा को ''मेरा प्रभु'' कहा था। यीशु ने पूछा कि भला, ''जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?'' कोई जवाब नहीं मिला। यीशु अपने दाऊद की सन्तान होने से इनकार नहीं कर रहा था, पर वह दिखा रहा था कि केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है क्योंकि वह दाऊद से बड़ा है। इसकी भविष्यवाणी तब हुई थी जब परमेश्वर ने दाऊद से कहा था कि इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए प्रतिज्ञा किया हुआ ''पुत्र'' ही ''मेरा पुत्र ठहरे'' (1 इतिहास 17:13; 22:10)। यीशु दाऊद की सन्तान ही नहीं, बल्कि परमेश्वर का पुत्र है। केवल पृथ्वी के शासन से बढ़कर उसकी सेवकाई कहीं अधिक थी, पर यहूदी लोग केवल इतना ही चाहते या उम्मीद रखते थे।

परमेश्वर ने निकट भविष्य और उससे दूर भविष्य के विषय में दाऊद से दोहरी प्रतिज्ञा की: उसकी गद्दी पर बैठने के लिए एक पुत्र के साथ-साथ एक वारिस की भी जिसने न केवल उसका पुत्र बल्कि परमेश्वर का पुत्र भी होना था। सुलैमान राजा ने इस्राएल की गद्दी पर अपने पिता की गद्दी सम्भाली और पहली प्रतिज्ञा को पूरा किया। यीशु अर्थात मसीहा नहीं अन्तिम और पूर्ण रूप में प्रतिज्ञा को पूरा किया और आज भी वह ''दाऊद की गद्दी पर बैठा'' है!

आज के लिए प्रतिज्ञाएं

2 शमूएल 7:5-16 परमेश्वर बेशक विशेष रूप से दाऊद से बात कर रहा था पर इस बाइबली इतिहास की इस महत्वपूर्ण घटना से आज भी मसीही लोगों के सीखने के लिए बहुत कुछ है।

पहले तो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का पूरा होना मनुष्य के सिद्ध होने पर निर्भर नहीं है। दाऊद के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा बिना शर्त के है। दाऊद ने बाद में चाहे कुछ भयंकर पाप किए, पर परमेश्वर ने उसके साथ अपना वचन निभाया। आम तौर पर हम अपनी और कलीसिया के लोगों की कमियों को देखने पर निराश हो जाते हैं, पर हमें निराश नहीं होना चाहिए, परमेश्वर अपनी सभी प्रतिज्ञाओं के पूरा करेगा और यीशु आज भी सिंहासन पर है और उसके लोगों के लिए उद्धार आज भी पक्का है।

दूसरा परमेश्वर अपनी योजनाओं को पूरा करेगा, इसके लिए समय चाहे जितना भी लगे। दाऊद से यीशु तक आने में एक हज़ार वर्ष लग गया, पर फिर भी मसीहा आ गया। इसी प्रकार यीशु के आने के बाद से बेशक दो हज़ार वर्ष बीत गए हैं, पर पवित्र शास्त्र हम से प्रतिज्ञा करता है कि वह दोबारा आने वाला है। हमें कभी निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर हमारी समय सारणी के अनुसार काम नहीं करता, बल्कि हमें उसके उद्देश्यों के पूरा होने में विश्वास रखते हुए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है। यदि हम उसमें भरोसा रखते हैं और उससे मुंह नहीं फेरते तो निश्चय ही वह हमें आशीष देगा।

तीसरा, हमें यीशु के विषय में अधूरी सच्चाइयों को मानने से चौकस रहना आवश्यक है। बरतिमाई सही था जब उसने यीशु को ''दाऊद की सन्तान'' कहा, पर उसकी बात सच्चाई का केवल कुछ भाग थी। आज यीशु को संक्षेप में महान व्यक्ति, भविष्यवक्ता या ''उद्धारकर्त्ता'' नहीं बल्कि केवल ''छुड़ाने वाला'' के रूप में माना जाता है। यीशु के ख्रिस्तुस/मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के पूर्ण अंगीकार से कुछ भी अपर्याप्त था।

चौथा, परमेश्वर के लिए हमारा किया गया कोई भी काम हमारे लिए किए गए परमेश्वर के काम जितना नहीं होता। दाऊद परमेश्वर के लिए मन्दिर बनाना चाहता था। परमेश्वर ने उसे याद दिलाया कि असली दाता तो वही है और उसे किसी चीज़ की घटी नहीं है कि हम उसे दें। परमेश्वर ने दाऊद को इतना कुछ दिया कि वह उसकी अपेक्षा या इच्छा से कहीं बढ़कर था। इसी प्रकार जब हम यह सोचते हैं कि हम परमेश्वर को वह जीवन दे सकते हैं जो हमारे शुभ कर्मों या हमारी आत्मिक प्राप्तियों के कारण उसकी दृष्टि में स्वीकार्य हैं तो हम अपने आपको धोखा दे रहे होते हैं। इसके विपरीत, जैसा कि हम आगे देखेंगे, परमेश्वर ने हमारे लिए यीशु के द्वारा वह प्राप्त किया है जिसे हम अपने लिए कभी नहीं कर सकते थे। हम से उसकी आज्ञा मानने को कहा जाता है; पर उसकी बात मानते हुए हमें याद रखना आवश्यक है कि यीशु अर्थात मसीहा के द्वारा जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है उसकी तुलना में ''हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चीथड़ों के समान हैं'' (यशायाह 64:6)। अन्धे बरतिमाई की तरह हम उसे केवल इतना पुकार सकते हैं, ''दया कर!'' और यीशु के द्वारा वह यही करने की प्रतिज्ञा करता है।

दाऊद मन्दिर बनाने के लिए योग्य क्यों नहीं था?

दाऊद को मन्दिर बनाने देने की अनुमति देने के परमेश्वर के इनकार का कारण इस सुझाव को छोड़ कि दाऊद यह सोचने में अति विश्वासी था कि उसे ऐसा करना चाहिए, 2 शमूएल 7 या इसके समानान्तर 1 इतिहास 17 में नहीं मिलता। परन्तु 1 राजाओं 5:3 और 1 इतिहास 22:8; 28:3 इसका कारण दिया गया है कि दाऊद मुख्यतया एक लड़का था और उसने बहुत लहू बहाया था।

इस बात में उसे मन्दिर बनाने के अयोग्य क्यों बना दिया? दो उत्तर सम्भव हैं। पहला तो 1 राजाओं 5:3 से मिलता है जहां सुलैमान ने सुझाव दिया कि दाऊद लड़ाइयों में इतना व्यस्त रहा कि उसे मन्दिर बनाने का समय ही नहीं मिला। परन्तु प्रमुख कारण के रूप में ऐसा सम्भव नहीं लग रहा क्योंकि 2 शमूएल 7:1 कहता है कि मन्दिर बनाने की दाऊद की इच्छा तब हुई जब ''यहोवा ने खुद को उसके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया था।'' और सम्भव कारण 1 इतिहास 22:8 में मिलता है: ''तू ने लोहू बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं, सो तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दुष्टि में बहुत लोहू बहाया है'' (देखें 1 इतिहास 28:3)। अन्य शब्दों में दाऊद के बहुत लहू बहाने ने किसी प्रकार से मन्दिर को बनाने के काम के लिए उसे ''अशुद्ध'' बना दिया। (इसके साथ चलने वाले लहू और औपचारिक शुद्धता के सम्बन्ध में मूसा के कुछ नियमों के लिए देखें लैव्यव्यवस्था 17.) उसके पुत्र सुलैमान को यह परेशानी नहीं आई क्योंकि उसका आरम्भिक शासन शान्ति और समृद्धि का समय था (1 राजाओं 5:4)। सुलैमान ने घोषणा की:

मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है अर्थात् उस बान के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी; कि तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गद्दी पर बैठाऊंगा, वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा (1 राजाओं 5:5)।